ISSN 2349-638X

REVIEWED INTERNATIONAL JOURNAL

AAYUSHI INTERNATIONAL INTERDISCIPLINARY RESEARCH JOURNAL (AIIRJ)

MONTHLY PUBLISH JOURNAL

VOL-II | ISSUE-VIII | AUGUST | 2015

Address
- Vikram Nagar, Boudhi Chouk, Latur.
- Tq. Latur, Dis. Latur 413512
- (+91) 9922455749, (+91) 9158387437

Email
- editor@aiirjournal.com
- aiirjpramod@gmail.com

Website
- www.aiirjournal.com

CHIEF EDITOR:– PRAMOD PRAKASHRAO TANDALE

हिंदी गीतों में चित्रित माता का स्वरूप

डॉ.जोगेंद्रसिंह बिसेन
प्र.प्रधानाचार्य,
दयानंद कला महाविद्यालय, लातूर

साहित्यकार संवेदनशील होता है वह अपनी रचना के माध्यम से विभिन्न विषयों को प्रतिपादित करता है। हिंदी साहित्यकारों ने भी अपनी रचनाओं के माध्यम से विभिन्न विषयों पर अपनी अभिव्यक्ति की है। हिंदी साहित्यकारों ने अपनी विभिन्न विधाओं में भिन्न–भिन्न विषयों के साथ माँ के रूप को भी चित्रित किया है। स्वाभाविक रूप से हिंदी गीतों में भी माता के संबंध में चित्रण हुआ है।

दुनिया का कोई राष्ट्र अपने देश को माँ या माता के रूप में संबोधित नहीं करता जैसे– हम भारतवासी करते हैं। कोई भी इंग्लैंड माता, अमरिका माता, जपान माता नहीं कहता जब कि हम भारतवासी भारत माता कहते हैं। केवल हम ही हैं जो अपने राष्ट्र को माता के नाम से संबोधित करते हैं और माता कहते हुए उसे स्वर्ग से भी अधिक महान संबोधित करते हैं। भारतभूमि को मातृभूमि माता के नाम से कई कवियों ने संबोधित किया है–

''जननी जन्मभूमि स्वर्ग से महान है''[1]

अर्थात जन्मभूमि को जननी माता के रूप में गीतकार ने स्वीकार किया है।

कई रचनाकारों ने मातृभूमि को दुर्गा कहकर देवी के रूप में संबोधित किया है। दुर्गा दुष्टों का दमन करती है वैसे ही भारत माँ दुर्गा, काली के रूप में दुष्टों का संहार करती है। इस विषय में अपने विचारों को अभिव्यक्त करते हुए बंकिमचंद्र ने अपने उपन्यास आनंदमठ में लिखा है–

''त्वंहि दुर्गा दशप्रहरणधारिणी
कमला कमल–दल विहारिणी
वाणी विद्यादायिनी

नमामि त्वां
नमामि कमलाम् अमलां अतुलाम् सुजलां सुफलां मातरम्''[2]

तो इसी प्रकार 'सहगान' में संकलित गीत के रचनाकार ने मातृभूमि का गौरवगान करते हुए लिखा है–

''जाग उठो माँ दुर्गा बनकर
कोटि भुजाओं में बल भरकर
तेरे भक्त पुजारी जन का
सागर सा लहराये अंतर
नतमस्तक हो फिर जग मांगे
तेरा आशिष भारत माँ''[3]

रचनाकार ने कहीं दुर्गा, काली बनकर दुष्टों का दमन करनेवाली भारतमाता का वर्णन किया है। तो कहीं भारतमाता को सरस्वति कहकर ज्ञान की देवता के रूप में संबोधित किया है। जो भारतमाता सरस्वति के समान हमें ज्ञान देकर हमारा मार्ग आलोकित करती है तो कहीं लक्ष्मी के रूप में स्वीकार कर अर्थसंपन्नता प्रदान करनेवाली, कहीं प्रलयंकर तो कहीं दयामयी रूप में भारतमाता का चित्रण प्रस्तुत किया है। गीतकार माता से निर्भयता प्रदान करने की भी प्रार्थना करता है। 'मुक्ति सायनी' नामक रचना में रचनाकार ने अभिव्यक्ति की है–

''दुर्गा बन अन्याय मिटाती
सरस्वति बन मार्ग दिखाती
लक्ष्मी बन उद्योग सिखाती
तुम प्रलयंकर तुम दयामय
X X X
माँ ध्रुवध्येय भावना भर दो
कर दो मोह हटा मन निर्भय''[4]

एक बहुत बड़ी विशेषता यह है कि राष्ट्र की आराधना करनेवाले कई रचनाकारों ने अपने नाम का जिक्र नहीं किया। राष्ट्र को माता के रूप में संबोधित करते हुए मातृभूमि के लिए सबकुछ समर्पण करने की भावना को भी रचनाकारों ने अपनी रचनाओं में

अभिव्यक्ति प्रदान की है। जब राष्ट्र पर मुसीबत आती है भारत माँ के बेटों ने मातृभूमि को उस आपत्ति से मुक्त किया है। लोकहित प्रकाशन लखनऊ द्वारा प्रकाशित सरल सहगान में रचनाकार अपनी भावनाओं को व्यक्त करते हुए लिखते हैं–

"हम सब तेरे प्यारे बच्चे,
बंधन में बहुबार पड़े।
किंतु मुक्ति के लिए बता माँ
कहाँ न जूझे कब न लड़े।
मरण–शांति की दाता है तू जीवन–क्रांति विधाता
जय–जय भारत माता।"[5]

भारत माता जैसी पालन करती है वैसे ही वह संहारक भी है। वह दुष्टों का दमन करती है। अरियों का संहार करती है। उसकी भूजाओं में तीक्ष्ण कृपाण भी है। इस माता का सम्मान बनाए रखने के लिए उसके सपूत अपने प्राणों को न्यौछावर करते हैं। पराधिनता में फँसी भारतमाता को मुक्त करने की कल्पना गीतकार ने की है। राष्ट्र पर आयी विपत्तियों से भारतमाता को मुक्त करना गीतकार अपना कर्तव्य मानता है। सत्येंद्रपाल द्वारा संकलित लोकहित प्रकाशनद्वारा प्रकाशित 'सिंहनाद' नामक किताब में 'माता फँसी विपदा में' रचना में गीतकार ने अपने विचारों को व्यक्त किया है–

"माता फँसी विपद् में क्या कोई आ रहा है?।ध्रु।।
माता फँसी विपद् में, संतान किसलिए हम ?
वह कैद में पड़ी है, आज़ाद किसलिए हम ?
जकड़ी है बंधनों में, दु:ख में कराहती है–
नित उसको फाँस कोड़े, दिलहाय फट रहा है,
खूँ से शरीर लथपथ दिल तो दहल उठा है
माता को मुक्त करने क्या कोई आ रहा है।"[6]

माता विपदा में हो तो उसकी संतान का दायित्व है वह उसे मुक्त करें। हम भारतमाता की संतान हैं अत: हमारा दायित्व है हम उसे पराधिनता के बंधनों से मुक्त करें। रचनाकार ने पराधिनता में फँसी भारतमाता का यहाँ वर्णन किया है।

'हे जन्मभूमि भारत' नामक रचना में रचनाकार ने भारत माता का बहुत ही सुंदर चित्र रेखांकित किया है जिसमें भारतमाता की विशेषताओं को चित्रित किया है। गीतकार ने लिखा है–

"हे जन्मभूमि भारत, हे कर्मभूमि भारत
हे वंदनीय भारत, अभिनंदनीय भारत
जीवन सुमन चढ़ाकर आराधना करेंगे
तेरी जनम–जनम भर हम वंदना करेंगे
हम अर्चना करेंगे।। १।।
महिमा महान तू है, गौरव निधान तू है
तू प्राण है हमारी, जननी समान तू है
तेरे लिए जियेंगे, तेरे लिए मरेंगे
तेरे लिए जनमभर, हम साधना करेंगे
हम अर्चना करेंगे।। २।।
जिसका मुकुट हिमालय जग जगमगा रहा है
सागर जिसे रतन की, अँजुलि चढ़ा रहा है
वह देश है हमारा, ललकार कर कहेंगे
उस देश के बिना हम, जीवित नही रहेंगे
हम अर्चना करेंगे।। ३।।
जो संस्कृति अभी तक, दुर्जेयसी बनी है
जिसका विशाल मंदिर, आदर्श का धनी है
उसकी विजय ध्वजाले, हम विश्व में चलेंगे
संस्कृति सुरभि पवन बन, हर कुंज में बहेंगे
हम अर्चना करेंगे।। ४।।
शाश्वत स्वतंत्रता का, जो दीप जल रहा है
आलोक का पथिक जो, अविराम चल रहा है
विश्वास है कि पलभर, रूकने उसे न देंगे
उस दीप की शिखा को, ज्योतित सदा रखेंगे
हम अर्चना करेंगे।। ५।।"[7]

अर्थात भारत हमारी जन्मभूमि है, कर्मभूमि है। यह वंदन की भूमि है, अभिनंदन की भूमि है। अपना जीवन पुष्प चढ़ाकर मातृभूमि की अर्चना करने की कल्पना रचनाकार ने की है। हिमालय जिसका मुकुट है तथा सागर जिसके चरणों पर रत्नों की अंजुलि अर्पित कर

रहा है यह हमारा देश है इस देश के बिना हम जीवित नही रह सकते ऐसी भावनाएँ रचनाकार ने व्यक्त की है। भारत की संस्कृति दुर्जेय है इसे कोई जीत नहीं सका जिस संस्कृति का मंदिर विशाल एवं आदर्शों की प्रतिष्ठापना करनेवाला है। ऐसे अपने राष्ट्र की विजय ध्वजा को लेकर हम विश्व में आगे बढ़ेंगे तथा इस संस्कृति की सुगंधित पवन को लेकर हरस्थान पर जायेंगे और भारत माँ की अर्चना करेंगे। इस राष्ट्र का स्वतंत्रता का दीपक जगत् को ज्ञान देकर जगत् का मार्ग प्रकाशमान कर रहा है। इस राष्ट्र दीपक की ज्योति को हम सदा प्रज्ज्वलित रखेंगे। हम राष्ट्र की अर्चना करेंगे। इन शब्दों में मातृभूमि के प्रति अपनी भावनाओं को रचनाकार ने व्यक्त किया है।

जैसे गीतों में राष्ट्र को अपनी माता के रूप में संबोधित किया है वैसे ही कहीं गंगा माता कहकर नदी को भी माता के रूप में संबोधित किया है। तो कहीं गौमाता कहकर गाय को भी माँ के रूप में स्वीकार किया है। एक हिंदी लोकगीत है जिस लोकगीत में रचनाकार ने गाय को माता कहा है। लोकगीत में कहा है–

''मत मारो बेदर्दी वो गैया है
गैया है वो मैया है मत मारो बेदर्दी वो गैया है।
दही दूध वो हमें खिलावे
घास की आप खिवैया है
पालन कियो जनम से अब तक इस नाते से मैया है
मत मारो बेदर्दी वो गैया है।''[8]

गाय को बेदर्दी से मारने की बात का भारतीय परंपरा में अनादिकाल से विरोध किया गया है। भारतीय परंपरा में पालन–पोषण करनेवाली को भी माँ कहा गया है और इतनाही नही जन्मदात्री माँ से भरणपोषण करनेवाली माँ का स्तर ऊँचा रखा गया है। देवकी ने भगवान कृष्ण को जन्म दिया लेकिन पाला माँ यशोदा ने इसलिए कृष्ण के साथ देवकी की तुलना में माँ यशोदा का नाम अधिक लिया जाता है। अत: पालन करनेवाली माँ को महत्वपूर्ण स्थान दिया गया है। गौमाता स्वयं घास खाती है और हमे दही दूध देती है। वो हमारा जनम से पालन करती है इस नाते से उसे मैया कहा गया है।

निष्कर्ष :

निष्कर्ष रूप में हम कह सकते हैं कि–

- माँ के मुख्य दो रूप हमारे सामने आते हैं जन्मदात्री माँ तथा भरण–पोषण करनेवाली माँ।
- भारतीय परंपरा में जन्मदात्री माँ से भी भरण–पोषण करनेवाली माँ को श्रेष्ठ माना गया है।
- हिंदी साहित्य जगत् में धरतीमाता, भारतमाता, गौमाता, गंगामाता को भी माँ के रूप में स्वीकार किया है।
- विश्व में भारत ही एकमात्र राष्ट्र है जहाँ राष्ट्र को माता के रूप में स्वीकार किया गया है।
- हिंदी गीतकारों ने भारत माता को स्वर्ग से भी श्रेष्ठ माना है।
- हिंदी गीतों में मातृभूमि को देवी के रूप में स्वीकार किया है, तो कहीं उसे भरण–पोषण करानेवाली माता बताया है, तो कहीं सहारा बताया है।

अत: ऐसी मातृभूमि के चरणों में कोटी–कोटी नमन।

संदर्भ संकेत सूचि :

१. गीतसुधा – पृ.११
२. आनंदमठ – बंकिमचंद्र, पृ.१९
३. सरल सहगान – लोकहित प्रकाशन, पृ.६१
४. सिंहनाद – सत्येंद्रपाल, पृ.६७
५. सरल सहगान – लोकहित प्रकाशन, पृ.२६
६. सिंहनाद – सत्येंद्रपाल, पृ.६५
७. राष्ट्रगुंजन – पृ.५९
८. लोकगीत –